

Samyak
An Institute For Civil Services

THINK IAS

JOIN SAMYAK

Samyak

An Institute For Civil Services

DAILY

CURRENT नाना

27 अगस्त

9875170111

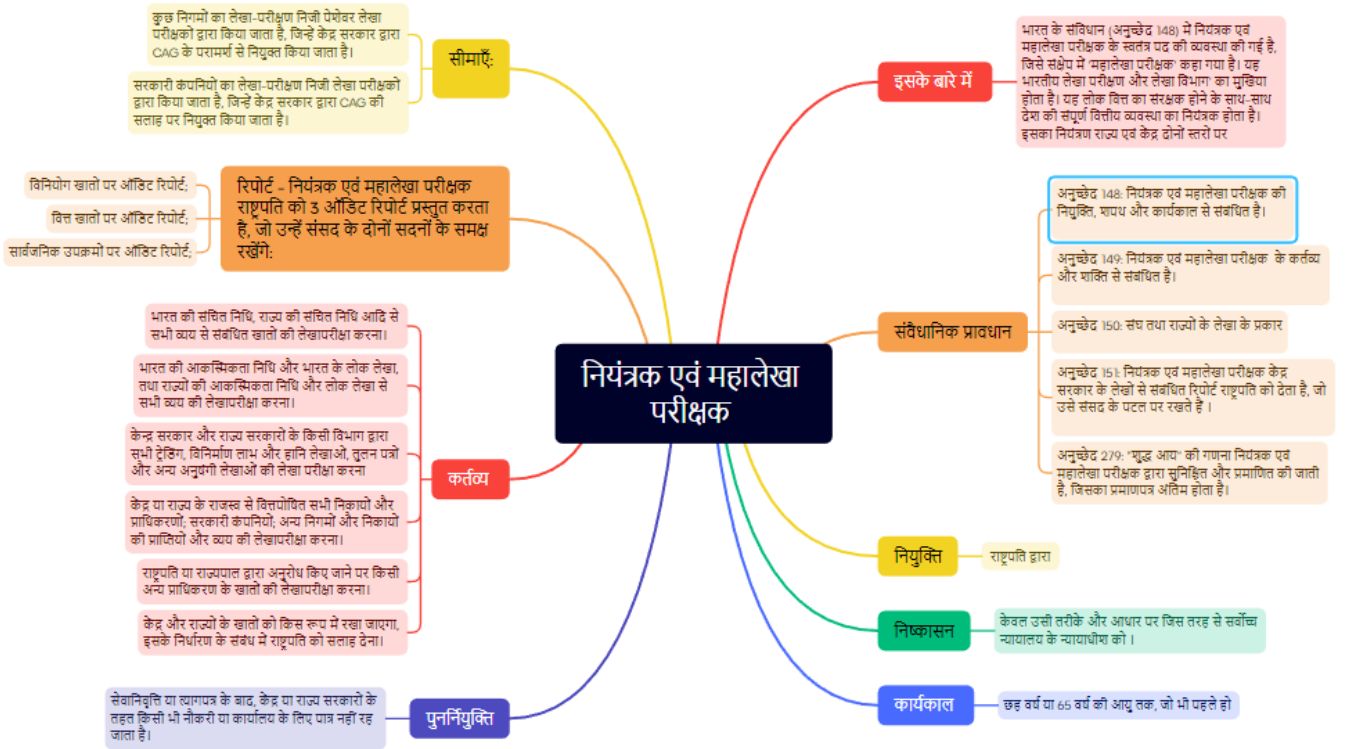
SAMYAK IAS, NEAR RIDDHI-SIDDHI, JAIPUR

नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक की रिपोर्ट संसद की समीक्षा के अधीन हैं: सर्वोच्च न्यायालय


पाठ्यक्रम में प्रासंगिकता - सामान्य अध्ययन-11: विभिन्न संवैधानिक पदों पर नियुक्ति और विभिन्न संवैधानिक निकायों की शक्तियाँ, कार्य और उत्तरदायित्व।

सुर्खियों में क्यों ?

- भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने हाल ही में इस बात पर प्रकाश डाला कि भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (सीएजी) की रिपोर्ट संसद द्वारा जांच के अधीन हैं।
- यह निर्णय कर्नाटक पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड (केपीसीएल) और कर्नाटक एम्टा कोल माइंस लिमिटेड (केईसीएमएल) के बीच कोयले के कथित दुरुपयोग को लेकर विवाद से जुड़े एक मामले के दौरान आया।
- न्यायालय ने सीएजी रिपोर्ट को अंतिम रूप दिए जाने और संसदीय जांच की प्रतीक्षा किए बिना आपराधिक जांच शुरू करने के लिए आधार के रूप में उपयोग करने के लिए केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) की आलोचना की।



अन्य खबरें

चर्चा का विषय	महत्वपूर्ण जानकारी
अंकोरवाट मंदिर	<ul style="list-style-type: none"> • सुर्खियों में क्यों - कंबोडिया के अंकोरवाट में आगंतुक टेंपल रन वीडियो गेम की गतिविधियों की नकल करने का प्रयास कर रहे हैं, जिससे संरक्षणकर्ता 900 वर्ष पुरानी संरचना को संभावित नुकसान पहुंचने की चिंता में हैं। • इसके बारे में - यह 200 एकड़ के क्षेत्र में फैला दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक स्मारक है। • निर्माण - इसका निर्माण खमेर राजा सूर्यवर्मन द्वितीय ने लगभग 900 साल पूर्व, 1110-1150 के आसपास करवाया था। • समर्पित - यह मूल रूप से हिंदू भगवान विष्णु को समर्पित था। हालांकि, 12वीं शताब्दी के अंत तक यह बौद्ध मंदिर बन गया। • यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल - 1992 में, मंदिर परिसर यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल बन गया। • अंगकोर शहर - यह खमेर साम्राज्य की राजधानी था।
	<div style="display: flex; align-items: center;"> <div style="background-color: yellow; padding: 5px; margin-right: 10px;"> <p>बलुआ पत्थर के ब्लॉक का उपयोग करके बनाया गया</p> <p>बिना मोर्टार के इस्तेमाल के पत्थरों को एक साथ जोड़ा गया</p> </div>  <div style="background-color: yellow; padding: 5px; margin-left: 10px;"> <p>खमेर वास्तुकला</p> </div> </div> <p>मंदिर में पाँच प्रमुख मीनारें हैं जो मेरु पर्वत की चोटियों का प्रतीक हैं, जिसे हिंदू और बौद्ध पौराणिक कथाओं में देवताओं का निवास माना जाता है।</p>
यूनिफाइड लेंडिंग इंटरफेस (ULI)/ एकीकृत ऋण इंटरफेस	<ul style="list-style-type: none"> • सुर्खियों में क्यों - भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर ने हाल ही में कहा कि यूनिफाइड लेंडिंग इंटरफेस (ULI) की जल्द ही पूरे देश में शुरुआत की जाएगी। यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (UPI) की तरह, जिसने देश में खुदरा भुगतान प्रणाली



में क्रांति ला दी है, ULI भी ऋण देने के परिदृश्य को बदल देगा।


- **घोषणा** - बिना किसी बाधा के ऋण उपलब्ध कराने के लिए इस सार्वजनिक तकनीकी प्लेटफॉर्म के लिए पायलट प्रोजेक्ट की घोषणा पिछले वर्ष अगस्त में कर दी गई थी।
- **इसके बारे में** - डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना की एक अवधारणा जो बैंकों, एनबीएफसी, फिनटेक कंपनियों और स्टार्ट-अप को भुगतान, ऋण और अन्य वित्तीय गतिविधियों में अभिनव समाधान प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित करती है।
- **डिजिटल ऋण वितरण**: ऋण मूल्यांकन के लिए आवश्यक डेटा केंद्र और राज्य सरकारों, खाता एग्रीगेटर्स, बैंकों जैसी विभिन्न संस्थाओं के पास उपलब्ध है, लेकिन, ये डेटा सेट अलग-अलग प्रणालियों में हैं, जो नियम-आधारित ऋण के समय पर वितरण में बाधा उत्पन्न करते हैं।
- **घटक**: ULI आर्किटेक्चर में सामान्य और मानकीकृत एपीआई (एप्लीकेशन प्रोग्रामिंग इंटरफेस) हैं, जिन्हें विभिन्न स्रोतों से सूचना तक डिजिटल पहुंच सुनिश्चित करने के लिए 'प्लग एंड प्ले' दृष्टिकोण के लिए डिज़ाइन किया गया है।

महत्व:

- यह कई डेटा सेवा प्रदाताओं से ऋणदाताओं तक विभिन्न राज्यों के भूमि रिकॉर्ड सहित डिजिटल जानकारी के निर्बाध और सहमति-आधारित प्रवाह की सुविधा प्रदान करेगा।
- यह विशेष रूप से छोटे और ग्रामीण उधारकर्ताओं के लिए ऋण मूल्यांकन के लिए लगने वाले समय को कम करेगा।
- यह कई तकनीकी एकीकरण की जटिलता को कम करेगा।
- यह उधारकर्ताओं को व्यापक दस्तावेज़ीकरण की आवश्यकता के बिना ऋण की निर्बाध डिलीवरी और त्वरित टर्नअराउंड समय का लाभ प्राप्त करने में सक्षम करेगा।

डायनासोर प्रजाति, अल्पकारकुश किर्गिज़िकस

- **सुर्खियों में क्यों** - हाल ही में अल्पकारकुश किर्गिज़िकस नामक एक नई डायनासोर प्रजाति की खोज की गई है, जो लगभग 165 मिलियन वर्ष पहले मध्य एशिया में किर्गिस्तान के क्षेत्र में विचरण करती थी।
- **इसके बारे में**: किर्गिस्तान के फरगाना डिप्रेशन के उत्तरी भाग में मध्य जुरासिक बालाबांसाई संरचना में बड़े थेरोपोड डायनासोर की एक नई प्रजाति की खोज की गई।
- **समयकाल**: 165 से 161 मिलियन वर्ष पहले जुरासिक काल के कैलोवियन युग के दौरान मौजूद था।
- **विशेषता**: इसके शरीर की लंबाई 7 से 8 मीटर थी, और तथाकथित पोस्टऑर्बिटल हड्डी पर एक अत्यंत उभरी हुई 'भौ' थी, जो इस बिंदु पर एक सींग की उपस्थिति को

	<p>इंगित करती हैं।</p> <ul style="list-style-type: none"> • महत्व: डायनासोर के सबसे महत्वपूर्ण बड़े समूहों में से एक, जिसमें टायरानोसॉरस और एलोसॉरस, साथ ही आधुनिक पक्षी शामिल हैं। <ul style="list-style-type: none"> ○ मध्य यूरोप और पूर्वी एशिया के बीच खोजा गया पहला बड़ा जुरासिक शिकारी डायनासोर।
<p>अमराबाद टाइगर रिजर्व</p>	<ul style="list-style-type: none"> • स्थान: तेलंगाना के दक्षिणी भाग में नागरकुरनूल और नलगोंडा जिले में। • वन: यह नल्लामाला वन के एक हिस्से को कवर करता है, जो पूर्वी घाट श्रृंखला का एक भी हिस्सा है। • क्षेत्रफल: 2611.4 वर्ग किलोमीटर। • आकार: यह भारत के सबसे बड़े बाघ अभ्यारणों में से एक है। यह कोर क्षेत्र के संदर्भ में दूसरा सबसे बड़ा बाघ अभ्यारण है। • प्रमुख जलाशय: श्रीशैलम बांध और नागार्जुन सागर बांध, जो कृष्णा नदी से जल प्राप्त करते हैं। • जनजाति: चेंचू जनजाति 
<p>फ़ेरोअन एनोर्थोसाइट चट्टानें</p>	<ul style="list-style-type: none"> • सुर्खियों में क्यों - हाल ही में प्रकाशित एक अध्ययन में चंद्रमा की मिट्टी में फ़ेरोअन एनोर्थोसाइट नामक एक प्रकार की चट्टान की उपस्थिति की सूचना मिली है। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि यह 1960 के दशक में चंद्र भूमध्य रेखा से अमेरिकी अपोलो और पूर्व सोवियत संघ के लूना मिशनों द्वारा देखी गई बातों की पुष्टि करता है। • चट्टानों के बारे में: एक प्रकार की चट्टान जो ठंडे मैग्मा से बनती है, जो बताती है कि शुरुआती चंद्रमा की सतह पिघली हुई थी। • निर्माण: पिघले हुए लावा से खनिजों के क्रिस्टलीकृत होने पर बनता है। समय के साथ, यह मैग्मा ठंडा होकर जम जाता है, जिससे एक अलग संरचना वाली चट्टानें बनती हैं। • चंद्रमा पर उल्कापिंड के प्रभाव ने अंततः इन चट्टानों को बारीक धूल में बदल दिया। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि चंद्रमा का वातावरण सभी उल्काओं को इसकी सतह तक पहुँचने देता है। <p>खोज के निहितार्थ</p> <ul style="list-style-type: none"> • यह इस सिद्धांत का समर्थन करता है कि प्रारंभिक दौर में चंद्रमा की बाहरी परत वैश्विक मैग्मा महासागर द्वारा बनाई गई थी। • इससे पता चलता है कि, पृथ्वी के विपरीत, चंद्रमा ने ज्वालामुखी गतिविधि या प्लेट विवर्तनिकी का अनुभव नहीं किया है, जिससे यह अपनी प्राचीन सतह को बनाए रखने में सक्षम रहा है।

	<ul style="list-style-type: none"> यह आइंस्टीन के सामान्य सापेक्षता के सिद्धांत जैसी व्यापक अवधारणाओं से जुड़ा है, जो बताता है कि कैसे चंद्रमा के कम गुरुत्वाकर्षण के कारण पृथ्वी की तुलना में वहाँ समय थोड़ा तेजी से चलता है। 		
<p>गगनयान मिशन; व्योममित्र</p>	<ul style="list-style-type: none"> सुर्खियों में क्यों - इसरो ने व्योममित्र के लिए सिर का डिज़ाइन पूरा कर लिया है, यह अर्ध-मानव रोबोट है जो आगामी गगनयान मिशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। यह उपलब्धि भारत के मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम में एक महत्वपूर्ण कदम है क्योंकि व्योममित्र 2024 के लिए निर्धारित गगनयान के लिए मानव रहित प्रारंभिक मिशनों में एक महत्वपूर्ण घटक बनने के लिए तैयार है। <p>गगनयान मिशन</p> <ul style="list-style-type: none"> गगनयान मिशन भारत की पहली मानव अंतरिक्ष उड़ान पहल है। इसके तहत 3 सदस्यों के चालक दल के साथ 400 किलोमीटर की निचली पृथ्वी कक्षा (LEO) में 3 दिवसीय मानव मिशन भेजा जाएगा और उन्हें सुरक्षित रूप से पृथ्वी पर वापस लाया जाएगा। मानव मिशन से पहले, दो मानव रहित मिशन, गगनयान-1 (G1) और गगनयान-2 (G2) विभिन्न प्रणालियों और प्रोटोकॉल का परीक्षण करने के लिए संचालित किए जाएंगे। व्योममित्र G2 मिशन का हिस्सा होगी। गगनयान मिशन की सफलता भारत को मानव अंतरिक्ष उड़ान क्षमता वाले देशों (अमेरिका, रूस और चीन) के विशिष्ट समूह में शामिल कर देगी। व्योममित्र का विकास: इसरो की इनर्शियल सिस्टम यूनिट (आईआईएसयू) द्वारा विकसित व्योममित्र को ऊपरी मानव शरीर जैसा बनाया गया है, जिसमें चलने योग्य भुजाएँ, एक चेहरा और सेंसर वाली गर्दन है। यह मानव कार्यों का अनुकरण करेगा और मानव शरीर पर अंतरिक्ष यात्रा के प्रभावों का आकलन करने में मदद करेगा, जो भविष्य के मिशनों में अंतरिक्ष यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का एक महत्वपूर्ण पहलू है। 		
<p>पॉलीग्राफ परीक्षण</p>	<table border="0" style="width: 100%;"> <tr> <td style="width: 50%; vertical-align: top;"> <p>पॉलीग्राफ टेस्ट</p> <ul style="list-style-type: none"> सिद्धांत: यह इस आधार पर संचालित होता है कि जब कोई व्यक्ति झूठ बोलता है तो उसकी शारीरिक प्रतिक्रियाएँ सत्य बोलने पर होने वाली प्रतिक्रियाओं से भिन्न होती हैं। तंत्र: संदिग्ध व्यक्ति से कार्डियो-कफ़ या संवेदनशील इलेक्ट्रोड जैसे उपकरण जुड़े होते हैं, ताकि प्रश्न पूछे जाने पर रक्तचाप, नाड़ी दर, श्वसन, पसीने की ग्रंथि की गतिविधि और रक्त प्रवाह को मापा जा सके। प्रतिक्रिया के आधार पर परिणाम: प्रत्येक प्रतिक्रिया को एक संख्यात्मक मान दिया जाता है, ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि व्यक्ति सच बोल रहा है, या झूठ। </td> <td style="width: 50%; vertical-align: top;"> <p>पॉलीग्राफ टेस्ट के लिए दिशा-निर्देश</p> <ul style="list-style-type: none"> सेल्फी एवं अन्य बनाम कर्नाटक राज्य एवं अन्य (2010) में, सर्वोच्च न्यायालय ने माना कि: पॉलीग्राफ टेस्ट केवल अभियुक्त की सहमति से ही किया जा सकता है। अभियुक्त के पास परीक्षण के शारीरिक, भावनात्मक और कानूनी निहितार्थों की पूरी जानकारी होनी चाहिए। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग द्वारा वर्ष 2000 में जारी पॉलीग्राफ टेस्ट के लिए दिशा-निर्देशों का पालन किया जाना चाहिए। अभियुक्त की सहमति को न्यायिक मजिस्ट्रेट के समक्ष दस्तावेजित किया जाना चाहिए। स्वेच्छा से सहमति प्राप्त पॉलीग्राफ टेस्ट के माध्यम से प्राप्त कोई भी साक्ष्य या जानकारी न्यायालय में स्वीकार की जा सकती है। </td> </tr> </table>	<p>पॉलीग्राफ टेस्ट</p> <ul style="list-style-type: none"> सिद्धांत: यह इस आधार पर संचालित होता है कि जब कोई व्यक्ति झूठ बोलता है तो उसकी शारीरिक प्रतिक्रियाएँ सत्य बोलने पर होने वाली प्रतिक्रियाओं से भिन्न होती हैं। तंत्र: संदिग्ध व्यक्ति से कार्डियो-कफ़ या संवेदनशील इलेक्ट्रोड जैसे उपकरण जुड़े होते हैं, ताकि प्रश्न पूछे जाने पर रक्तचाप, नाड़ी दर, श्वसन, पसीने की ग्रंथि की गतिविधि और रक्त प्रवाह को मापा जा सके। प्रतिक्रिया के आधार पर परिणाम: प्रत्येक प्रतिक्रिया को एक संख्यात्मक मान दिया जाता है, ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि व्यक्ति सच बोल रहा है, या झूठ। 	<p>पॉलीग्राफ टेस्ट के लिए दिशा-निर्देश</p> <ul style="list-style-type: none"> सेल्फी एवं अन्य बनाम कर्नाटक राज्य एवं अन्य (2010) में, सर्वोच्च न्यायालय ने माना कि: पॉलीग्राफ टेस्ट केवल अभियुक्त की सहमति से ही किया जा सकता है। अभियुक्त के पास परीक्षण के शारीरिक, भावनात्मक और कानूनी निहितार्थों की पूरी जानकारी होनी चाहिए। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग द्वारा वर्ष 2000 में जारी पॉलीग्राफ टेस्ट के लिए दिशा-निर्देशों का पालन किया जाना चाहिए। अभियुक्त की सहमति को न्यायिक मजिस्ट्रेट के समक्ष दस्तावेजित किया जाना चाहिए। स्वेच्छा से सहमति प्राप्त पॉलीग्राफ टेस्ट के माध्यम से प्राप्त कोई भी साक्ष्य या जानकारी न्यायालय में स्वीकार की जा सकती है।
<p>पॉलीग्राफ टेस्ट</p> <ul style="list-style-type: none"> सिद्धांत: यह इस आधार पर संचालित होता है कि जब कोई व्यक्ति झूठ बोलता है तो उसकी शारीरिक प्रतिक्रियाएँ सत्य बोलने पर होने वाली प्रतिक्रियाओं से भिन्न होती हैं। तंत्र: संदिग्ध व्यक्ति से कार्डियो-कफ़ या संवेदनशील इलेक्ट्रोड जैसे उपकरण जुड़े होते हैं, ताकि प्रश्न पूछे जाने पर रक्तचाप, नाड़ी दर, श्वसन, पसीने की ग्रंथि की गतिविधि और रक्त प्रवाह को मापा जा सके। प्रतिक्रिया के आधार पर परिणाम: प्रत्येक प्रतिक्रिया को एक संख्यात्मक मान दिया जाता है, ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि व्यक्ति सच बोल रहा है, या झूठ। 	<p>पॉलीग्राफ टेस्ट के लिए दिशा-निर्देश</p> <ul style="list-style-type: none"> सेल्फी एवं अन्य बनाम कर्नाटक राज्य एवं अन्य (2010) में, सर्वोच्च न्यायालय ने माना कि: पॉलीग्राफ टेस्ट केवल अभियुक्त की सहमति से ही किया जा सकता है। अभियुक्त के पास परीक्षण के शारीरिक, भावनात्मक और कानूनी निहितार्थों की पूरी जानकारी होनी चाहिए। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग द्वारा वर्ष 2000 में जारी पॉलीग्राफ टेस्ट के लिए दिशा-निर्देशों का पालन किया जाना चाहिए। अभियुक्त की सहमति को न्यायिक मजिस्ट्रेट के समक्ष दस्तावेजित किया जाना चाहिए। स्वेच्छा से सहमति प्राप्त पॉलीग्राफ टेस्ट के माध्यम से प्राप्त कोई भी साक्ष्य या जानकारी न्यायालय में स्वीकार की जा सकती है। 		
<p>एक्यूट इंसेफेलाइटिस सिंड्रोम (ईईएस)</p>	<ul style="list-style-type: none"> इसके बारे में: मच्छरों द्वारा प्रसारित इंसेफेलाइटिस का एक गंभीर मामला जिसमें तेज बुखार और मस्तिष्क की सूजन हो जाती है। 2006 में विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा नामित, बीमारियों के एक समूह 		

	<p>को इंगित करता है।</p> <ul style="list-style-type: none">• आमतौर पर बच्चों और युवा वयस्कों को प्रभावित करता है।• निदान: इसका निदान आईजीएम एंटीबॉडी कैंचर एलिसा द्वारा किया जाता है, और वायरस अलगाव राष्ट्रीय संदर्भ प्रयोगशाला में किया जाता है।
भारतीय नौसेना पोत (आईएनएस) मुंबई	<ul style="list-style-type: none">• इसके बारे में - भारतीय नौसेना का जहाज आईएनएस मुंबई हाल ही में श्रीलंका की तीन दिवसीय पहली यात्रा पर कोलंबो बंदरगाह पर पहुंचा।• आईएनएस मुंबई तीसरा दिल्ली श्रेणी का निर्देशित मिसाइल विध्वंसक है, जिसे 22 जनवरी, 2001 को भारतीय नौसेना में शामिल किया गया था।• इसे मुंबई में मझगांव डॉक लिमिटेड में बनाया गया था।• नौसैनिक अभियानों में महत्वपूर्ण भूमिका - ऑपरेशन पराक्रम (2002), ऑपरेशन सुकून (2006) और ऑपरेशन राहत (2015) जैसे प्रमुख नौसैनिक अभियानों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई,• इस जहाज ने अपना मध्य-जीवन उन्नयन पूरा कर लिया और 8 दिसंबर, 2023 को विशाखापत्तनम में पूर्वी नौसेना कमान में शामिल हो गया।

